समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू
डाक पेटी सं. 4272, कौच्ची-682036, भारत
The Marine Products Export Development Authority
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue
P.B. No. 4272, Kochi-682 036, India
फोन Phone : 2311979, 2311901, 2311854, 2311803, 2313415, 2314468, 2315065
फैक्स Fax : 91-484-2313361
E-mail : ho@mpeda.gov.in
Website : www.mpeda.com

**प्रेस विज्ञप्ति**

# एमपीईडीए की मड क्रैब (स्काइला सेराटा) हैचरी प्रौद्योगिकी को 20 साल के लिए मिला पेटेंट अधिकार

**एमपीईडीए अध्यक्ष के अनुसार यह प्रौद्योगिकी विभिन्न प्रकार के एक्वाकल्चर और सीफूड के निर्यात को बढ़ावा देगी**

**नई दिल्ली / कोच्चि, 14 मई :** भारत के एक्वाकल्चर क्षेत्र में प्रभावशाली कीर्तिमान स्थापित करते हुए, एमपीईडीए-आरजीसीए मड क्रैब हैचरी प्रौद्योगिकी, जो देश में अपनी तरह की एकमात्र प्रौद्योगिकी है, को डिजाइन और ट्रेड मार्क्स महानियंत्रक, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2011 से वर्ष 2030 तक 20 वर्षों के लिए पेटेंट प्रदान किया गया है।

मड क्रैब (वैज्ञानिक नाम - स्काइला सेराटा) की दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में बहुत अधिक मांग है। इन देशों में जीवित केकड़ों को स्वादिष्ट समुद्री भोजन के रूप में अत्यधिक पसंद किया जाता है। मड क्रैब के लिए हैचरी प्रोद्योगिकी को राजीव गांधी सेंटर फॉर एक्वाकल्चर (आरजीसीए) ने विकसित किया, जो समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) की अनुसंधान और विकास शाखा है।

एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के एस श्रीनिवास ने कहा कि यह भारतीय एक्वाकल्चर के इतिहास में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है क्योंकि केंद्र सरकार ने देश में पहली बार इस प्रोद्योगिकी के लिए पेटेंट प्रदान किया है।

आरजीसीए के भी अध्यक्ष श्री श्रीनिवास ने कहा, "यह प्रौद्योगिकी उन किसानों, जो श्रिंप कृषि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय एक्वाकल्चर के लिए विविध प्रजातियों पर काम करना चाहते हैं, की बीज की आवश्यकताओं को काफी हद तक पूरा करेगी। एमपीईडीए इस उपलब्धि को देश के एक्वाकल्चर किसानों और आरजीसीए के युवा वैज्ञानिकों को समर्पित कर रहा है जिन्होंने इस मनोबल बढ़ाने वाले उपलब्धि को हासिल करने के लिए अथक परिश्रम किया है।"

आरजीसीए ने भारत में मड क्रैब के लिए कोई और हैचरी न होने को ध्यान में रखते हुए मड क्रैब की हैचरी प्रौद्योगिकी के पेटेंट अधिकार के लिए वर्ष 2011 में पेटेंट, डिज़ाइन और ट्रेड मार्क्स महानियंत्रक के पास आवेदन किया था।

हालांकि, लंबी कठिन प्रक्रिया का पालन करने के बाद पेटेंट प्रदान किया गया था। दुनिया के विभिन्न अनुसंधान संस्थानों ने प्रसिद्ध विशेषज्ञों के साथ इस विषय पर चर्चा की, जिन्होंने विभिन्न शोध संदर्भों को संदर्भित किया और तथ्यों और आंकड़ों के साथ आरजीसीए के वैज्ञानिकों के साथ कई बैठकों का आयोजन किया। विभिन्न मुद्दों का पता लगाने के बाद, आखिरकार 20 साल के लिए

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू
डाक पेटी सं. 4272, कौच्ची-682036, भारत
The Marine Products Export Development Authority
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue
P.B. No. 4272, Kochi-682 036, India
फोन Phone : 2311979, 2311901, 2311854, 2311803, 2313415, 2314468, 2315065
फैक्स Fax : 91-484-2313361
E-mail : ho@mpeda.gov.in
Website : www.mpeda.com

एमपीईडीए-आरजीसीए की हैचरी प्रौद्योगिकी को पेटेंट अधिकार देने का निर्णय लिया गया, जो भारत में अद्वितीय है।

विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में मड क्रैब की भारी मांग को ध्यान में रखते हुए, एमपीईडीए ने वर्ष 2004 के दौरान मड क्रैब के बीज (जो क्रैब-इंस्टार के नाम से जाना जाता है) के उत्पादन के लिए एक पायलट परियोजना शुरू की थी और बाद में भारत में वर्ष 2013 के दौरान प्रति वर्ष 10 लाख की क्षमता के साथ पहली बार वाणिज्यिक हैचरी बनाई गई थी। इसकी बढ़ती मांग को देखते हुए आरजीसीए की मड क्रैब हैचरी की बीज उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 14 लाख प्रतिवर्ष कर दिया गया है।

फिलीपींस के दक्षिण पूर्व एशियाई मत्स्य विकास केंद्र (एसईएएफडीईसी) के रूप में जाने जाने वाले एक्वाकल्चर डिवीजन ऑफ इंटरनेशनल इंस्टीच्यूट के प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ एमिलिया टी क्विनिटियो ने 2013 तक आरजीसीए के लिए परामर्श सेवा को बढाया था। तब से, आरजीसीए के वैज्ञानिकों ने कम समय के भीतर ही प्रौद्योगिकी को मानकीकृत किया।

एमपीईडीए के अध्यक्ष ने कहा कि क्रैब इंस्टार की जीवित रहने की दर को तीन प्रतिशत से बढ़ाकर सात प्रतिशत करना हमारी बड़ी उपलब्धि होगी। इसके अलावा, हैचरी इकाई को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि सभी विभाग पूरी तरह से जैव सुरक्षा उपायों के साथ एक ही स्थान पर हैं। अब तक, 72 लाख 80 हजार बीजों का उत्पादन किया गया है और इसकी आपूर्ति पूरे देश में 659 किसानों को की गई है।

आरजीसीए की स्थापना सी बास, मड क्रैब, जेनेटिकली इम्प्रूव्ड फार्मड तिलपिया (जीआईएफटी), कोबिया, पोम्पानो और आर्टेमिया जैसी विविध प्रकार की एक्वाकल्चर प्रजातियों के व्यावसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए की गई है। यह बेहतर गुणवत्ता से युक्त बीजों का उत्पादन और उनकी आपूर्ति करके भारत के समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है, जो एक्वाकल्चर के लिए एक प्रमुख इनपुट है।

श्री श्रीनिवास ने कहा, "हम भारत में विभिन्न प्रकार के एक्वा कल्चर को बढ़ावा देने के लिए परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए एमपीईडीए-आरजीसीए को निरंतर सहयोग देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अलावा केंद्र सरकार के वाणिज्य विभाग और मत्स्य पालन विभाग को धन्यवाद देना चाहते हैं।"